International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 345-346

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 345-346
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-07-2020
Accepted: 19-08-2020

डॉ. अर्चना पाल
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, आर.सी.ए. गर्ल्स (पी. जी.) कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अर्चना पाल
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, आर.सी.ए. गर्ल्स (पी. जी.) कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

कालिदास द्वारा वर्णित स्त्री–पुरुष के प्रेम का परिपाक एवं आदर्श रूपः मनोवैज्ञानिक पक्ष

डॉ. अर्चना पाल

सारांश
कालिदास संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। उनकी काव्यकला को प्राचीन भारतीय आलोचकों एवं साहित्य शास्त्रियों ने भी सराहा है और आधुनिक काल के साहित्यिक समीक्षकों ने भी । किसी भी महाकवि से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे विविध विषयों का समुचित ज्ञान हो । महाकवि कालिदास इस अपेक्षा पर खरे उतरते हैं । कालिदास ने मानव स्वभाव एवं मनोदशाओं को जितनी स्वाभाविकता से चित्रित किया है उतना संभवतः अन्य किसी संस्कृत कवि ने नहीं किया है इससे प्रकट होता है कि कालिदास को मानव–मनोविज्ञान का सूक्ष्म ज्ञान था।

कूटशब्दः पतिव्रताः, कौलीन, प्रत्यभिज्ञान, बाष्प, क्षितेरहं

प्रस्तावना
मानवीय स्वभाव एवं मनोदशाओं के परिप्रेक्ष्य में कालिदास की काव्यकला का मूल्यांकन निःसन्देह अपेक्षित है। कालिदास ने पति–पत्नी के पारस्परिक प्रेम के परिपाक एवं आदर्श रू‍प तथा एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना का भी वर्णन किया है।
कालिदास ने अपनी रचनाओं में पति पत्नी के पारस्परिक प्रेम के आदर्श रूप तथा एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना का भी वर्णन किया है। कालिदास की कृतियों में अनेक स्थल पर ऐसे उल्लेख आये हैं, जहाँ पति ने भी अपनी पत्नी के प्रति अटूट प्रेम को प्रदर्शित किया है।
शिव से पार्वती के विवाह–सम्बन्धी वार्ता करने के लिये जब अंगिरा ऋषि हिमालय पर्वत के पास आते हैं तो हिमालय और उनकी पत्नी मेना एक दूसरे की सहमति से ही विवाह के लिये तैयार होतें है।

शैलः सम्पूर्णकामोऽपि मेनामुखमुदैक्षत ।
प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः ।। (कुमार० ६.२५)

''यद्यपि हिमालय ने पार्वती को शंकरजी के लिये देने का निश्चय बहुत पहले ही कर लिया था, किन्तु फिर भी (अंगिरा ऋषि की बातें सुनकर) उन्होंने अपनी पत्नी मेना की ओर देखा। प्रायः गृहस्थ लोग कन्यादान के विषय में अपनी पत्नी की ही प्रधानता रखते है।''

मेना मेनापि तत्सर्वं पत्युः कार्यमभीप्सितम् ।
भवन्त्यव्यभिचारिण्यो भर्तुरिष्टे पतिव्रताः (कुमार० ६.८६)

''मेना ने भी अपने पति की इच्छा के अनुकूल ही शंकरजी के साथ पार्वती के विवाह की स्वीकृति दे दी, क्योंकि पतिव्रता स्त्रियाँ अपने पति के विरुद्ध कोई कार्य नहीं करती है।
कुमारसम्भवम् महाकाव्य में जब ब्रह्मचारी वेषधारी शिव पार्वती से शिव के विषय में अनर्गल वचनों को कहते हैं तो पार्वती कहती हैं कि तुमने शिव के विषय में जो कुछ सुन रखा है, यदि वह यथार्थ ही हो तो भी मेरा मन तो उन्हीं शिव में दृढ़ता के साथ रम गया है, क्योंकि– न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते (कुमार० ५.८२)

''अपनी इच्छा से व्यवहार करने वाला व्यक्ति निन्दा को नहीं देखता।''

रघुवशम में राम के द्वारा सीता का परित्याग के बाद लक्ष्मण उन्हें वन में छोड़कर वापिस अयोध्या में राम के पास आते हैं, तब लक्ष्मण राम को सीता के द्वारा रो–रोकर कहे हुए वचनों को सुनते हैं, जिन्हें सुनकर राम का हृदय द्रवित हो जाता है और वे रोने लगते हैं .

बभूव रामः सहसा सवाष्पस्तुषारवर्षीव सहस्यचन्द्रः।
कौलीनभीतेन गृहान्निरस्ता न तेन वैदेहसुता मनस्तः।।
(रघु० १८.८८)

''लक्ष्मण द्वारा सीता का सन्देश सुनकर तुपारबर्षी पौष मास के चन्द्रमा के समान राम की आंख से टपटप आँसू गिरने लगे, क्योंकि उन्होंने सीता को अपने मन से नहीं त्यागा था किन्तु लोकनिन्दा के भय में ही छोड़ा था।''

रघुवशम् में उल्लेख है कि जब इन्दुमती माला के आघात से मर जाती है, तो अज उसकी इस प्रकार की अवस्था को देखकर बेहोश हा जात हैं। कालिदास ने अज के इन्दुमती के प्रति अटूट प्रेम को दर्शाते हुए उसकी दुःखित अवस्था का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है

वपुषा करणोज्झितेन सा निपतन्ती पतिमप्यपातयत् ।
ननु तैलनिषेकबिन्दुना सह दीपार्चिरुपैति मेदिनीम् ।।
(रघु० ८.३८)

''प्राणहीन होकर शरीर से गिरती हुयी उस इन्दुमती ने अपने पति अज का भी गिरा दिया अर्थात् इन्दुमती के गिरते ही अज भी बेहोश होकर गिर गये, क्योंकि गिरते हुये तेल की बूँदों के साथ क्या दीपक की लो पृथ्वी पर नहीं गिर पड़ती।''

विललाप स बाष्पगद्गदं सहजामप्यपहाय धीरताम्।
अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु।।
(रघु० ८.४६)

''वे अज अपने स्वाभाविक धैर्य को छोड़कर आँसू से गद्गद् होकर विलाप करने लगे, जब अचतन लाहा भी अग्नि में तपाय जाने पर पिघल जाता है, तब शोक से संतप्त प्राणियों का क्या कहना है ?''

मनसापि न विप्रियं मया कृतपूर्व तव किं जहासि माम्।
न्नुशब्दपतिः क्षितेरहं त्वयि मे भावनिबन्धना रतिः।।
(रघु० ८.५२)

''मैनें पहले कभी मन से भी तुम्हारा अप्रिय नहीं किया है तो मुझे क्यों छोड रही हो ? सत्य पूछो तो मैं नाम–मात्र से पृथ्वी का पति हूँ, मेरा स्वाभाविक प्रेम तो तुम्हारे में ही है।''

धृतिरस्तमिता रतिश्च्युता विरतं गेयमृतुर्निरुत्सबः।
गतमाभरणप्रयोजनं परिशून्य शयनीयमद्य मे।।
(रघु० ८.६६)

''हे प्रिय ! आज तेरे बिना मैं अधीर हो रहा हूँ, मेरा आनन्द जाता रहा, गाना बजाना बन्द हो गया, भूषण पहनने का प्रयोजन समाप्त हो गया और मेरी सेज सूनी हो गयी है, अधिक क्या कहूँ तेरे बिना सभी व्यर्थ है।''

विभवेऽपि सति त्वया बिना सुखमेतावदजस्य गण्यताम्।
अहृतस्य विलोभनान्तरैर्मम सर्वे विषयास्त्वदाश्रयाः।।
(रघु० ८.६९)

''हे प्रिये ! इतना ऐश्वर्य होने पर भी तुम्हारे बिना अज का सारा सुख मिट्टी में मिल गया, क्योंकि मुझे और किसी वस्तु से तो प्रेम है नहीं। मेरे सभी सुखों का केन्द्र तो तुम्हीं थीं।''

निष्कर्ष

कालिदास ने अपनी कृतियों में स्त्री–पुरूषों की विविध मनोदशाओं का वर्णन करते हुये उनकी मनःस्थिति को विशद रूप में प्रदर्शित किया है। हिमालय–मेना, शिव–पार्वती, राम–सीता, कामदेव–रति, राजा अज–इन्दुमती के प्रेम का आदर्श रूप निःसन्देह वर्तमान पीढ़ी के लिये प्रेरणा का स्रोत है।

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची

1. कालिदास ग्रन्थावली – सं० सीताराम चतुर्वेदी, तृतीय संस्करण सं० वि० 2019।
2. कुमारसम्भवं महाकाव्यं (संजीवनी – हिन्दीव्याख्योपेतेम्) सं० एवं व्याख्याकार पं० शेष राज शर्मा रेग्मी, प्रथम संस्करण 1987, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
3. रघुवंशम् –व्याख्याकार डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, तृतीय संस्करण, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी 1983।
4. डॉ० उदय प्रताप सिंह – समाज मनोविज्ञान, द्वि.सं.।
5. डॉ० जितेन्द्र मोहन : सामान्य मनोविज्ञान।
6. श्रीमती पदमा कुमारी : सिगमेंड फ्रायड और मनोविश्लेषण।